ISBN : 978-93-83813-31-5

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

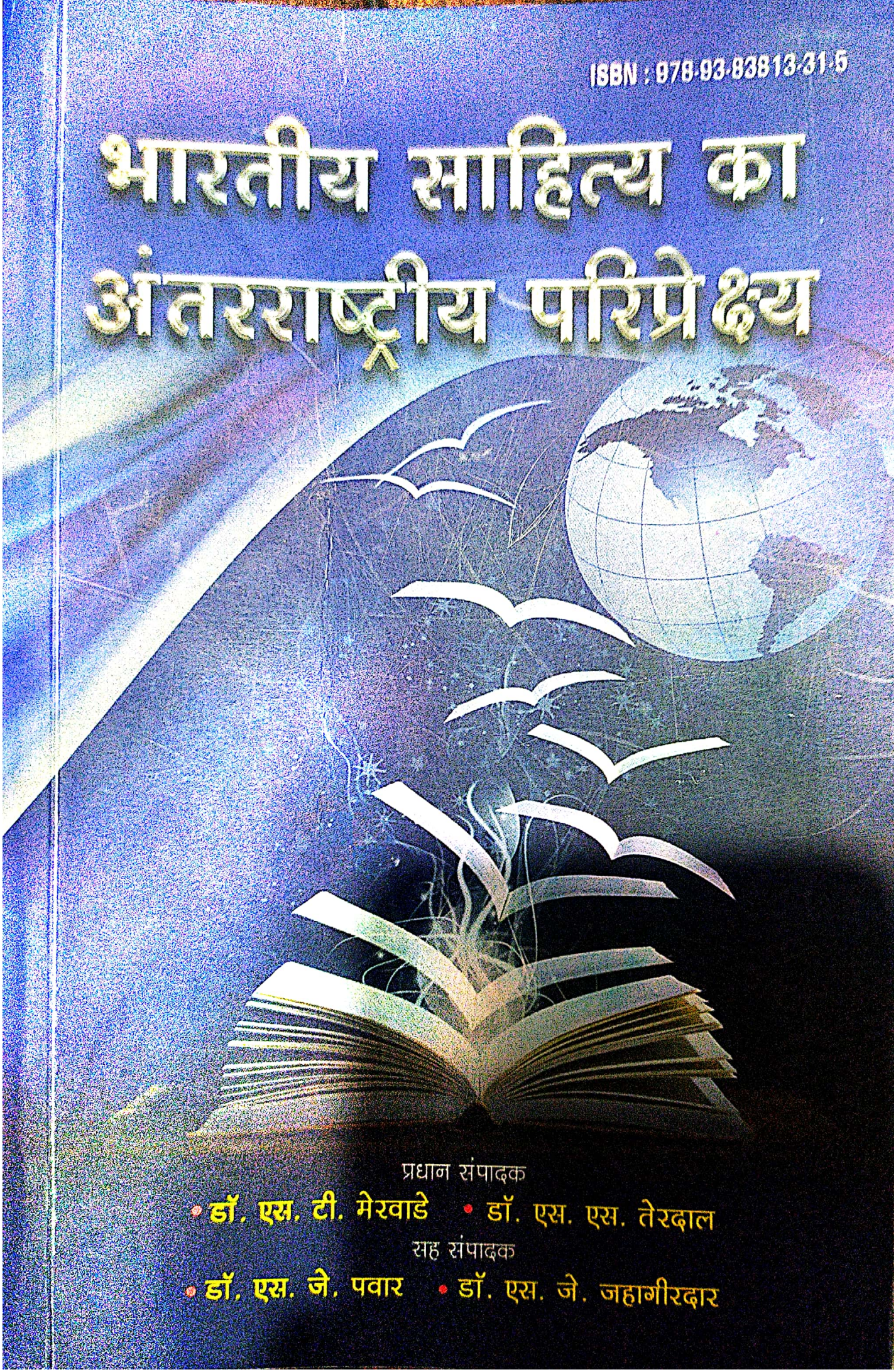

प्रधान संपादक

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे • डॉ. एस. एस. तेरदाल

सह संपादक

• डॉ. एस. जे. पवार • डॉ. एस. जे. जहागीरदार

Scanned with CamScanner

BHARATIYA SAHITYA KA ANTARARASHTRIYA PARIPREKSHYA :

ISBN 978-93-83813-31-5
Publisher : Soumya Prakashan
Kabeer Kunj, Mahabaleshawar Colony
Vijayapur - 586 103

© Publisher

First Edition : 2018
Copies : 1000
Pages : xii + 448 = 460
Price : **Rs. 300/-**
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भारतीय साहित्य का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
सह संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-31-5

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
'कंबीर कुंज', महाबलेश्वर कॉलनी,
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2018

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 448 = 460
मूल्य : **रु. 300/-**
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो
मुद्रक :

त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विट्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

Scanned with CamScanner

83. नई सदी के हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त आर्थिक समस्याएँ
• वैशाली वेंकटेश कुंभार 410

84. स्त्री विमर्श अनामिका-चुनी हुई कविताओं के संदर्भ में
• डॉ. कमलारानी 414

85. हिंदी गद्य साहित्य: विविध विमर्श
• डॉ. भारती एच. दोडमनी 419

86. 'चंद्रगिरि के किनारे' उपन्यास में तलाक की समस्या
• डॉ. खुद्दुस अ. पाटील 423

87. हिंदी पत्रकारिता
• नीता पाटील 427

88. आरिगपूडि के उपन्यास 'उल्टी गंगा' में नारी समस्या
• डॉ. बापुराव व्ही. पाटील 430

89. हिन्दी बाल साहित्य
• प्रो. सुनील ब. ताटे 437

90. हिन्दी पत्रकारिता
• प्रो. ए. व्हि सूर्यवंशी 443

■■

Scanned with CamScanner

आरिगपूडि के उपन्यास 'उल्टी गंगा' में नारी समस्या

• डॉ. बापुराव व्ही. पाटील

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान ने नारी को मतदान का अधिकार प्रदान किया तथा राष्ट्र निर्माण व विकास में नारी के योगदान के मार्ग को प्रशस्त किया। फलस्वरूप नारी जगत में एक चेतना का प्रादुर्भाव हुआ। सदियों से जो नारी दबी-पिछडी और पुरुष की अनुगामिनी रही उसमें पुरुष के समान अधिकार हर क्षेत्र में प्राप्त करने की आकांक्षा उत्पन्न हुई। शिक्षा प्राप्ति की सुविधा ने उसकी इस आकांक्षा को बल दिया और सामाजिक मंच पर नारी के एक नए रूप का प्रकटीकरण हुआ। राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न पदों के दायित्व को नारी ने सफलतापूर्वक वहन किया। राष्ट्रीय विकास की नीति निर्धारण में विशिष्ट भूमिका उसने निभायी तथा लडखडाती परिवारिक, आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए नौकरी के क्षेत्र में उसने पदार्पण किया। उसे अपने अस्तित्व का बोध हुआ और उसमे आत्मगौरव और स्वाभिमान के भावों का विकास होने लगा।

भारत में नारी मुक्ति आंदोलन का इतिहास

भारत में नारी मुक्ति आंदोलन के आरंभ का समय दिर्धारित करना कठिण है। क्योंकि इसका कोई निश्चित प्रमाण प्राप्त नहीं है। उत्तर वैदिक काल से नारी पर जैसे-जैसे बंधन जटिल होने लगे उसमें मुक्ति की कामना प्रबल होती गई। पर कुछ समय के लिए नारी ने अपने जीवन की स्थितियों को अपना भाग्य स्वीकार कर लिया। मध्यकाल से नवजागरण काल तक का इतिहास इसी समझौते का प्रमाण है। पश्चिमी आंदोलन के समान यह आंदोलन पुरुष जाति

Scanned with CamScanner

के विरुध्द न होकर, भारतीय नारी की खोई हुई प्रतिष्ठा, स्वतंत्रता, समानाधिकार की प्राप्ति के लिए था। राष्ट्रीय समस्याओं को स्त्रियों ने प्रारंभ से पुरुषों के साथ मिलकर ही सुलझाया। भारत पर जब कभी आक्रमण हुए उस समय राज्य का प्रशासन स्वयं संभाल, युध्द के लिए पति और पुत्र को प्रेरित कर युध्द में भेजनेवाली स्त्रियों की अनेक कहानियाँ इतिहास में मिलती है। 1758 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की राणी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, जमानी बेगम, देवी चौधरानी, कित्तूर राणी चन्नम्मा जैसी वीर महिलाओं ने अपने राष्ट्रीय चेतना का परिचय दिया।

19 वीं शताब्दी के भारतीय इतिहास की युगांतकारी घटना है। अंग्रेजी राज्य की स्थापना उसके साथ ही साथ अंग्रेजी सभ्यता, संस्कृती, शिक्षा साहित्य एवं विचारों का भारत में आगमन हुआ। भारतवासी जो नींद में डूबे हुए थे। उसमें अब जागृति और चेतना का विकास हुआ। देश के कुछ प्रमुख शिक्षित लोगों ने अनुभव किया। की हम भारत की प्रगती की दौड में बहुत पीछे रह गए है। परिणाम स्वरूप देश में अनेक सुधारवादी आंदोलनों का जन्म हुआ। सर्व प्रथम उन्होंने नारी की दीनावस्था की ओर अपना ध्यान आकृष्ट किया। जो नारी शताब्दियों पीछे दलित जीवन व्यतीत कर रही थी। सामाजिक प्रगती में बाधक सिध्द हो रही थी। इसके परिणाम स्वरूप देश में सुधारवादी कार्य आरंभ हुए। सामाजिक, राजनीतिक साहित्यिक आंदोलनों के साथ स्वयं नारी इस कार्य में लग गई। भारतीय नारी को पुरुष की दासता और सामाजिक रुढियों में एक साथ लडना पडा। भारतीय नारी का यह मुक्ति संघर्ष 19 वी शताब्दी के प्रारंभ से ही शुरु हुआ।

आरिगपूडि के उपन्यास 'उल्टी गंगा' में नारी समस्या

प्रत्येक युग का उपन्यासकार तद्युगीन परिस्थितियों से अवश्य प्रभावित होता है। समाज का सृष्टा एवं दृष्टा होने का कारण तत्कालीन परिस्थितियों का वह यथावत् चित्रण अपने उपन्यासों में करता है। आधुनिक युग के उपन्यासकार 'आरिगपूडि' ने भी युगीन परिस्थितियों का आकलन करके उनका सजीव चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। उनके उपन्यासों में नारी के विविध रूप चित्रित हुए है। उन्होंने जहाँ आदर्श नारी का चित्रण किया है वहीं परंपराओं की श्रृंखलाओं को तोडती हुई आधुनिक नारी के चरित्र का भी रेखांकन किया है।

Scanned with CamScanner

आरिगपूडि रमेश चौधरी ने अपने कई उपन्यासों में भारतीय नारी की परिस्थिति एवं सामाजिक मान्यताओं के कारण नारी जीवन में उत्पन्न हो रही समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में निम्न उल्लेखनीय है।

विवाह की समस्या

नर-नारी की सुगल कल्पना अत्यंत प्राचीन है। सृष्टि के आदि काल से लेकर अद्यावधि इस युगल रूप को विलग नहीं किया जा सकता है। पारिवारिक जीवन की आधारशिला विवाह ही है। हिंदू धर्मावलंबियों का यह विश्वास है कि नर-नारी का दापंत्य संबंध ईश्वर द्वारा निश्चित किया जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों में - "विवाह धर्म-संबंध है, इसलिए वह अकेले शरिरों का ही संबंध नहीं, बल्कि आत्माओं का ऐक्य भी है।" महत्मा गांधी: महिलाओं से पृ. 202.

आरिगपूडि ने नारी जीवन की प्रमुख समस्या विवाह का विश्लेषण 'उल्टी गंगा' इस उपन्यास में अत्यंत सशक्त ढंग से किया है। इसमें पार्वती नामक युवती की मार्मिक कथा वर्णित है। बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त वह नारी स्वातंत्र्य की पक्षपाती है। बचपन में ही उसका विवाह कृष्णमूर्ति नामक धार्मिक विचारों वाले युवक से निश्चित किया जाता है। किंतु सामाजिक रीति के अनुसार जब कृष्णमूर्ति उसे देखने आता है, तब वह सजधजकर अधरों पर लाली लगा कर उसके साामने आती है और रूमाल से उस लाली कि छिपाने का प्रयास करती है। कृष्णमूर्ति को यह पसंद नहीं आता। परिणामत: बाद में वह अपने किसी संबंधी से यह कहलवा भेजता है कि उसे पार्वती पसंद नहीं है। पार्वती को लेकर सगे-संबंधियों में कृष्णमूर्ति यह कहना शुरु करता है कि कॉलेज में पढी पार्वती का संबंध कितने ही पुरुषों के साथ है। कृष्णमूर्ति द्वारा की गयी बदनामी के कारण पार्वती को अन्य कोई रिश्ता भी नहीं आता। इसी दु:ख में पार्वती के पिता की मृत्यु हो जाती है।

कृष्णमूर्ति द्वारा ठुकराई जाने के कारण पार्वती अपमानित सी अनुभव करने लगती है। कुछ समय तक वह स्वयं को एक कमरे में बंद कर लेती है। बाद में वह फौज में भर्ती हो जाती है। फिर भी वह कृष्णमूर्ति को भुला नहीं पाती। प्रतिक्षण वह उसका स्मरण करती है। फौजी अफसरों के साथ घूमते समय पार्वती

Scanned with CamScanner

यही सोचती है कि कृष्णमूर्ति को याद कर कहती है कि - "तुमने मेरे मन पर चोट मारी, मेरी जिंदगी पर कालिख पोती, मुझे राख कर दिया, पर मैं जिंदी हूँ, साबूत अपने पैरों पर हूँ, मुझ पर भी परवाने मंडराते हैं। तुमने समझ क्या रखा है ?" आरिरापूडि: उल्टी गंगा पृ. 25.

अनेक पुरुषों द्वारा भोगी एवं छली गयी पार्वती बाद में अपने स्वतंत्र आचरण के कारण पछताने लगती है। वह जब फौज से सेवा निवृत्त होकर दिल्ली के किसी कार्यालय में बडे पद पर नियुक्त होती है तब गणेशन नामक युवक उसके संपर्क में आता है। वह उससे विवाह करती है। किंतु जब उस पता चलता है कि गणेशन पहले से ही विवाहित है तो उसे बहुत दु:ख होता है। अत: पार्वती स्वयं को सुधारने का प्रयास करती है। बहुत हद तक सुधर भी जाती है। जब उसके विभागाध्यक्ष की पत्नी उसके घर आकर उस पर लांछन लगाती है कि पार्वती उसके पति पर डोरे डाल रही है तो पार्वती के हृदय पर आघात होता है। क्रोध में पुन: वह अपने पुराने मार्ग को ही अपनाती है। अंत में विदेशों में जाकर शरण लेती है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने नारी के एक विशिष्ट रूप की चर्चा की है और कहा है कि समाज द्वाराबनाए गए नियमों के प्रतिक्रिया स्वरूप ही नारी स्वयं को परिवर्तित कर लेती है। इसी कारण वह हठी एवं भावुक हो जाती है। लेखक ने यह भी बतलाने का प्रयास किया है कि समकालीन समाज में नारी कितनी असहाय है।

दहेज समस्या

हिंदी सहित्य में दहेज प्रथा को लेकर अनेक उपन्यासों की रचना हुई है। आरिगपूडि ने भी अपने कुछ उपन्यासों में दहेज की इस घृणित प्रथा से व्यथित नारी पात्रों की अवतारणा की है। 'उल्टी गंगा' उपन्यास में पार्वती और कृष्णमूर्ति का विवाह बाल्यवस्था में ही निश्चित हो जाता है। किंतु युवावस्था में पदार्पण करने पर जब दोनों के विवाह की बात उठती है तब कृष्णमूर्ति दहेज में पंद्रह हजार रूपये की मांग करता है। पुत्र तथा पुत्री की शिक्षा में सारा धन लगा देने के कारण पार्वती के पिता उतना दहेज देने की स्थिति में नहीं होते। अत: दु:ख में ही उनकी मृत्यु हो जाती है। ऐसी अपमानजनक स्थिति में पार्वती कृष्णमूर्ति

Scanned with CamScanner

से घृणा करने लगती है और सेना में भर्ती हो जाती है। वह कृष्णमूर्ति को पैसों का लालची समझती है और अपना पहला वेतन उसे भेजना चाहती है। दहेज के संताप से पीडित वह अपने अतीत्व की रक्षा करने में भी असमथर्थ हो जाती है। उसे अनेक प्रतारणाओं को सहन करना पडता है। नारी की दीनावस्था का सहानुभूतिपूर्ण चित्रण लेखक ने पार्वती के माध्यम से किया है। समकालीन समाज में नारी का कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं रह गया है। वह दहेज के रूप में अधिकाधिक संपत्ति प्राप्त करने का साधन मात्र बनकर रह गयी है।

पारिवारिक समस्या

परिवार एक मौलिक सामाजिक संस्था है। नारी परिवार का एक महत्वपूर्ण अंग है। परिवार में नारी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डॉ. उषा पांडेय के शब्दों में - "भारतीय संस्कृति में परिवार मानव की भावनाओं, कोमल मनोवृत्तियों, स्नेह एवं ममता का केंद्र स्थल होता है। प्रेम और स्नेह दया और करूना, त्याग और उत्सर्ग इन सभी उदात भावनाओं का प्रस्फुटन परिवार के ममत्वपूर्ण वातावरण में होता है। नारी परिवार का एक विशिष्ट अंग रही है। उनके जननी, जाया, पुत्री, वधू और भगिनी रूप मानव हृदय की स्निध तरलता से आप्लावित है।" डॉ. उषा पांडेय, मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में नारी-भावना।

आरिगपूडि ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक जीवन में नारी के विविध रूपों का वर्णन किया है। प्रस्तुत उपन्यास में पार्वती कुरुप तो नहीं थी किंतु मोटे होंठों के कारण वह कृष्णामूर्ति नामक वर के द्वारा अस्विकृत की जाती है। वह भाषण कला में प्रवीण, संगीत की शौकीन, मिलनसार होने के बावजूद उसका विवाह नहीं हो पाता और वह जहाँ भी जाती है उसे ताने सुनने पडते हैं। लोग उसका फायदा उठाते हैं। परिणामस्वरूप उसके स्वभाव में उद्दंडता और प्रतिकार की भावना घर कर जाती है। वह एक विद्रोहिनी नारी के रूप में सामने आती हैं। उसके मान के भावों को लेखक ने निम्नानुसार चित्रित किया है। उसने अंत में निश्चय किया मैं जो जो चाहूँगी वह करूँगी। जैसा चाहूँगी करूँगी बिगडूंगी, मुझे किसी की परवाह नहीं हैं न कृष्णमूर्ति की, न राव की, न रामनाथ की, न कृष्णन की, न गणेश की, न उसकी, किसी भी नहीं, इस दुनिया की भी नहीं।

Scanned with CamScanner

राजानीति क्षेत्र में नारी की समस्या

स्वातंत्र्योत्तर भारत में नारी आज इतनी स्वतंत्र है कि वह बिना किसी रोक-टोक के राजनीति में भी भाग ले सकती है। भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण भरे पडे हैं जहाँ नारी अपनी सूझ-बूझ एवं बुद्धिमत्ता के कारण राजनीति के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा पायी है। कहा जा सकता है कि आरिगपूडि ने राजनीतिक परिवेश में नारी की सुरक्षा और उसकी विवशता का वर्णन किया है। समाज में उसे हर बार नीची दृष्टि से देखा जाता है - "नारी के राजनीतिक में प्रवेश करने से राजनैतिक जीवन में उनके संबंधों को लेकर जो उचित अनुचित चर्चा होने लग जाती है। वह अत्यंत जटिल समस्या बन जाती है। समाज में नारी की स्थिति विषयक एक और संकट खडा कर देता है। कभी-कभी तो यह स्थिति इतनी विषम हो जाती है कि नारी के सामने विकल्प प्रश्न खडा हो जाता है।

इस तरह 'उल्टी गंगा' की पार्वती एक आधुनिक नारी है। आरंभ में तो वह एक डरी डरी सहमी सहमी लडकी रहती थी किंतु एक पुरुष द्वारा जब वह अपमानित होती है तब उसके आचरण में परिवर्तन आ जाता है। समाज के किसी बंधन को वह स्वीकार नहीं कर पाती। पुरुष समाज के प्रति आक्रोश से वह भर उठती है। प्रतिशोध की भावना के कारण उचित अनुचित तथा नैतिक अनैतिक का विचार नहीं करती। कई पुरुषों से अनैतिक संबंध स्थापित करने बाद भी उसे मानसिक शांति से वंचित रह जाना पडता है। उपन्यास को पढने के बाद यह प्रश्न पाठक को झकझोरता है कि क्या नारी इस प्रकार का जीवन व्यतीत कर सकती है ? नारी जीवन की विडंबना का अत्यंत सजीव चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। उपन्यास का शीर्षक 'उल्टी गंगा' उपयुक्त बन पडा है।

पार्वती अत्यंत अनियंत्रित जीवन का वह आनंद लेना चाहती थी जिसमें उसका अपमान करनेवाला कोई न हो। वह भारत छोड यूरोप गयी। वहाँ अत्यंत विनोदमय विलासी जीवन बिताने लगी। जिसे भारतीय संस्कृति के समाज के मापदंडों के अनुसार अलुषित, गर्हित, गर्हित, निकृष्ट कहा जाता है। एक अत्यंत विद्रोह नारी का भारतीय संस्कृति के मूल्यों को झकझोरने वाला पार्वती का चित्रण है। गंगा है जो लोगों से अपना स्वार्थ साधती है। विश्व में लोग शांति

Scanned with CamScanner

पाने भारत आते हैं। पार्वती शांति पाने पश्चिमी देशों में जाती है। यही है पार्वती का विरोधी चरित्र उल्टी गंगा'।

'उल्टी गंगा' के उपन्यास में विवाह न होने के परिणाम स्वरूप पार्वती फौज में भारती होना चाहती है। लेकिन वहाँ उसे जिन समस्याओं का सामना करना पडता है उसका विवरण देते हुए लेखक पार्वती और श्री राव के संवाद के माध्यम से वह स्पष्ट करता है।

''हाँ, मैं वही काम करती हूँ जो अक्सर स्त्रियाँ करती हैं पर लड तो नहीं रही हूँ। लेकिन वही स्त्रियाँ भर्ती... खैर

काम खराब नहीं है।

मगर आप सेना में ?

जिस घटनाक्रम का मेरे सेना में प्रवेश करना परिणाम है, जिसे गुजरने के लिए चार-पाँच साल लगे कैसे मैं आपके दो-चार मिनटों में बता दूँ।

उपसंहार

नारी के विवाह को लेकर समाज में व्याप्त अन्य समस्याओं का भी चित्रण आरिगपूडि ने अपने उपन्यासों में विस्तारपूर्वक किया है। विवाह न होने के कारण समाज के नियमों का उल्लंघन करती हुई नारी का चित्रांकन विशेष रूप से इनके उपन्यासों में पाठकों को आकर्षित है। पुरुष द्वारा ठुकरा दी गयी नारी की स्वाभाविक प्रतिक्रिया का भी चित्रण अत्यंत सुंदर रूप से आरिगपूडि रमेश चौधरी ने किया है। लेखक का कहना है कि अविवाहित रहकर समाज में जीवन व्यतीत करना नारी के लिए कठिन कार्य है। पुरुष वर्ग की कांमुक दृष्टि हमेशा अविवाहित नारी का पीछा करती रहती है। ऐसी स्थिति में कामुक पुरुषों से अपने सतीत्व की रक्षा करना उसके लिए सर्वत्र संभव नहीं हो सकता।

■■

हिंदी विभाग, एस.बी. कला के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

Scanned with CamScanner